International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
IJLE 2021; 1(1): 19-21
www.educationjournal.info
Received: 19-11-2020
Accepted: 24-12-2020

Divesh Kumar Goyal
Research Scholar, Department of Political Science, Indira Gandhi Open University, New Delhi, India

Correspondence
Divesh Kumar Goyal
Research Scholar, Department of Political Science, Indira Gandhi Open University, New Delhi, India

महिला शिक्षा में आए परिवर्तनों के आधार पर महिलाओं की स्थिति का अध्ययन

Divesh Kumar Goyal

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु महिला शिक्षा को केंद्र में रखा गया है। जिसमे महिलाओं के विकास में सहायक शिक्षा व्यवस्था में आए आमूल चूल परिवर्तनों का पुनरावलोकन सम्मिलित किया गया है। यह अध्ययन शिक्षाविदों तथा शिक्षा व्यवस्था के अर्थशास्त्रियों हेतु भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने में बेहद कारगर सिद्ध होगा ।

कूट शब्दः- महिला शिक्षा, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका योजना

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जाति के कल्याण में उपयुक्त होने वाला सर्वोत्तम साधन है जिसकी जड़ें वर्षों पुरानी ऐतिहासिक घटनाओं के प्रस्फुटन के रूप में देखी जाती रही हैं। किसी भी समाज में पुरुष व महिलाओं का समान विकास एक सभ्य समाज का सबसे अच्छा उदाहरण माना गया है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को शिक्षित करना समाज की कई कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, महिला शोषण, लिंग भेद जैसी समस्याओं हेतु वरदान साबित हो सकता है।

महिलाओं की शिक्षा पर बल देते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 द्वारा कहा गया कि "शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरुष हो ही नहीं सकता यदि पुरुषों और स्त्रियों में से किसी एक के लिए सामान्य शिक्षा का प्रावधान करना हो तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाना चाहिए क्योंकि यह शिक्षा स्वयं ही अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जाएगी।"

परंतु भारतीय समाज पुरुष प्रधान होने के कारण महिलाओं को उनका संभावित स्थान देने में असमर्थ रहा है जिसके परिणाम प्रत्येक दशकीय जनसंख्या आंकड़ों के रूप में देखने को मिलते रहे हैं। वर्ष 2011 की जनगणना को आधार माना जाए तो भारत में महिला शिक्षा दर पुरुषों की तुलना में सदैव से कम ही रही है। जिसे तालिका में दिए गए आंकड़ों से समझा जा सकता है ।

तालिका 1 - वर्ष 2011 की साक्षरता दर

वर्ष	पुरुष	महिला
2011	82%	65%

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना है जिसके अंतर्गत महिलाओं की शिक्षा मेंआये परिवर्तनों का विश्लेषण करने की दृष्टि से निम्न बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।

1. महिला शिक्षा की पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. महिला शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु चलाई जाने वाली योजनाओं का अध्ययन।

महिला शिक्षा और उसकी पृष्ठभूमि

महिला शिक्षा में निरंतर परिवर्तनो की श्रृंखला का प्रारंभ वैदिक काल से ही हो चुका था जिसमे अनेकोनेक परिवर्तन देखने को मिलते है । वैदिक काल से ही महिला शिक्षा के विकास पर बल दिया गया है। ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं की रचनाओं में महिलाओं के योगदान का उल्लेख मिलता है जिन्हें ब्रह्मा वादिनी भी कहा जाता था। इसी क्रम में लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिक्ता, निवावारी तथा घोसा आदि कई ऋषिकाओ द्वारा ऋग्वेद के कई सूक्तों की रचना की गई है। इसी प्रकार ब्रिटिश काल में अंग्रेजी सरकार द्वारा 1813 के चार्टर एक्ट द्वारा भारतीयों की शिक्षा का प्रावधान किया गया परंतु उसमें महिला शिक्षा कोई स्थान स्पष्ट नहीं था परंतु 1835 के 'मैकाले मिनिट्स' द्वारा भारतीय शिक्षा में महिला शिक्षा को भी जोड़ दिया गया।

इसके पश्चात वुड्स डिस्पैच 1854 द्वारा शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु एक विस्तृत योजना निर्मित की गई जिसमे महिला शिक्षा के अतिरिक्त शिक्षण स्तर वर्गीकृत किए गए जिन्हें प्राथमिक, उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर कहा गया । [स्वप्निल श्रीवास्तव 2005]

स्वतंत्रता के पश्चात भी देश में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है जिसके गहन विचार हेतु विभिन्न समितियों तथा आयोगों का गठन किया गया है जिन का प्रमुख कार्य भारत सरकार द्वारा क्रियान्वित की गई योजनाओं का सुचारू संचालन करना है ।

महिला शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु चलाई जाने वाली योजनाओं का पुनरावलोकन -

कस्तूरबा गांधी बालिका योजना 2004

बालिका शिक्षा में बढ़ोतरी के उद्देश्य बनाई गई यही योजना केंद्र तथा राज्य सरकार के सहयोग से अमल में लाई गई है जिसके द्वारा अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग की महिलाओं या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की लड़कियों को निशुल्क शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं जिसके अंतर्गत सभी बालिकाओं को आवास उपलब्ध करवाना पुस्तकें शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाना सम्मिलित किया गया है।

इस योजना द्वारा प्रत्येक बालिकाओं के बैंक खाते में प्रतिमाह 100₹ भी जमा करवाए जाते हैं ताकि उनकी आर्थिक जरूरतों को पूरा किया जा सके।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ 2015

भारत सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास के संयुक्त प्रयासों के फलस्वरूप बालिकाओं को संरक्षण प्रदान करने अथवा सशक्त बनाने की दिशा में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना का शुभारंभ 22 जनवरी 2015 को किया गया। जिसे सबसे पहले सबसे कम लिंगानुपात वाले 100 जिलों में लागू किया गया ।

इस योजना के लक्ष्यों में लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए जिससे बालिकाओं का अस्तित्व और सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके। इसके अतिरिक्त शिक्षा के माध्यम से सामाजिक तथा वित्तीय रूप से लड़कियों को स्वतंत्र बनाने के भी प्रयास किए जा रहे हैं।

CBSE उड़ान योजना

यह योजना मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा इंजीनियरिंग अथवा तकनीकी क्षेत्र में बालिकाओं को सशक्त बनाने की दृष्टि से क्रियान्वित की गई है इसके अंतर्गत आर्थिक स्तर पर पिछड़े वर्गो की उन बालिकाओं को स्थान दिया गया है जिनकी वार्षिक आय 6 लाख से कम है । इस योजना के उद्देश्यों में कक्षा 11 तथा कक्षा 12 की छात्राओं हेतु निशुल्क शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना मुख्य है ।

इसके अलावा यूनिसेफ द्वारा भारत में चलाए जा रहे शिक्षा कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य भी प्रत्येक स्तर पर बालिकाओं को संरक्षण देना है जिसमे महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था को आसान बनाने हेतु जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे है ।

तालिका 2: वर्ष 1911 से 2011 तक पुरुष तथा महिला साक्षरता दर का आंकलन

वर्ष	पुरुष (%)	महिला (%)
1911	10.3	1.6
1921	12.3	1.8
1931	15.6	2.0
1941	24.0	7.3
1951	24.9	7.9
1961	34.0	13.0
1971	39.5	18.7
1981	49.5	24.8
1991	63.86	39.42
2001	75.8	54.16
2011	82.1	65.5

तालिका 2 में दिए गए आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला साक्षरता दर जो को वर्ष 1911 में 1.6% थी वर्ष 2011 में बढ़कर 65.5% हो गई अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि बालिका शिक्षा हेतु चलाई जाने वाली योजनाओं से समाज में जागरूकता आई है जिसके परिणामस्वरूप शैक्षिक दर में भी वृद्धि देखी जा सकती है ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि महिला शिक्षा में निरंतर परिवर्तन हुए हैं परंतु वैश्विक स्तर पर महिला शैक्षिक दर के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अभी और काम करने को आवश्यकता है।

उपरोक्त विश्लेषण से महिलाओं के लिए शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व स्पष्ट होते हुए भी यह उपेक्षित है इसलिए महिलाओं के सामने यह एक जटिल चुनौती के रूप में उभर कर सामने आया है। अतः एक राष्ट्रीय नीति बनाई जाए जिसके आधार पर उन सभी योजनाओं के लक्ष्यों का निर्धारण हो सके जिन्हे महिला शिक्षा अथवा बालिका शिक्षा महत्वपूर्ण माना गया है। इसी अतिरिक्त उन कारणों पर भी विचार किया जाने की आवश्यकता है जो महिला विकास में बाधक बने हुए है ।

संदर्भ सूची

1. स्वप्निल श्रीवास्तव (2005), महिला विकास एक परिदृश्य, नमन प्रकाशन, पृष्ट 23
2. चितरंजन ओझा (2010) नारी शिक्षा एवम सशक्तिकरण, दीप एंड दीप पब्लिकेशंस
3. सविता नागरा (1998) भारतीय समाज में कार्यशील महिलाए, क्लासिक पब्लिकेशंस